बेटा

लघुकथा

भारतीय जाबांज सैनिक जम्मू कश्मीर के कारगिल क्षेत्र में पाकिस्तानी घुसपैठियों का डटकर मुकाबला कर रहे थे। अपनी मातृभूमि की रक्षा हेतु सिर पर कफन बांधकर भारतीय सैनिक युद्ध में कूद पड़े थे। प्रतिदिन समाचार पत्रों, टी.वी. और रेडियो पर समाचार मिलते आज भारतीय सैनिकों ने फलां चोटी को पाकिस्तान के कब्जे से मुक्त करवा लिया... आज हमारे इतने सैनिकों ने मातृभूमि की खातिर हंसते हंसते वीरगति प्राप्त की।

बंतीदेवी अपना रात का सारा काम निपटा कर सोने लगी थी कि बाहर ड्योडी पर किसी ने दस्तक दी। बंती देवी उठकर ड्योडी तक गयी, द्वार खोलने से पहले एक बार उसने पूछ लेना उचित समझा।

कौन है?

मैं हूं मां आपका बेटा थोड़ू राम।

हां! थोड़ू राम का मेरा एक बेटा तो है, किंतु वह इस समय कारगिल में अपनी भारत मां की रक्षा के लिए दुश्मनों का मुकाबला कर रहा है।

मैं वही आपका बेटा हूं। बड़ी मुश्किल से जान बचाकर भाग आया हूं। अगर मैं भागकर नहीं आता तो मेरी लाश ही घर आती।

क्या कहा? जान बचाकर भाग आया है? दफा हो जा यहां से। तू मेरा बेटा नहीं हो सकता। मेरा खून इतना डरपोक कैसे हो सकता है? जो अपनी मातृभूमि को खतरे में छोड़ कर दूसरी मां के पल्लू में मुंह छिपाने चला आए। बंती देवी का गुस्सा सातवें आसमान पर था। वह क्रोध से कांप रही थी।

पर मां... कहते-कहते वह रुक गया।

तेरे इस प्रकार पीठ दिखाकर भाग आने से तो अच्छा था तू दुश्मन से मुकाबला करते हुए शहीद हो जाता और तेरी लाश ही घर आती तो मुझे स्वयं पर गर्व होता कि मैंने अपनी कोख से एक बहादुर बेटे को जन्म दिया है। अब तुम्हारी भलाई इसी में है कि मुझे जीवन भर अपना मुंह मत दिखाना। मेरे घर के दरवाजे तेरे लिए हमेशा-हमेशा के लिए बंद हैं। मैं सोचूंगी कि मेरा थोड़ू नाम का कोई बेटा था ही नहीं।

इतना कहकर बंती देवी वापस अपनी खाट की ओर लौट आई... थोड़ू राम उन्हीं कदमों से अपने मोर्चे की ओर चल पड़ा।

– यशपाल निर्मल

यह सच है कि हाथी चीटियों से डरते हैं?

हम यह बात हमेशा से सुनते आये हैं कि विशालकाय हाथी चींटियों से डरते हैं। अब इसकी पुष्टि एक शोध के माध्यम से भी हो गयी है। शोध के अनुसार पूर्वी अफ्रीका में बबूल और कीकर के पेड़ों पर रह रही चींटियां हाथियों से उन पेड़ों की रक्षा करती हैं।

कीनिया में किए गए एक शोध में शोधार्थियों ने देखा कि हाथियों के कारण पेड़ों को बेहद नुकसान पहुंचाता है। वहीं उन्होंने यह भी देखा कि बबूल और कीकर के पेड़ों पर रह रहीं इन चींटियों के कारण हाथीं उन पेड़ों को नुकसान नहीं पहुंचाते हैं। शोधार्थियों ने इस तथ्य कि पुष्टि के लिए इन पेड़ों से पहले चींटियों को अलग कर दिया। ऐसे में देखने में आया कि हाथी इन पेड़ों को खाने के लिए उत्सुक थे, लेकिन जैसे ही इन पेड़ों पर ये चींटियां बहुतायत में आयीं तब हाथी उन पेड़ों की ओर बहुत कम गये। शोध के दौरान शोधकर्ताओं ने पाया कि हाथियों ने पेड़ की उन शाखाओं को छुआ तक नहीं जिस पर ये चींटियां थीं। हाथियों को इन चींटियों की गंध आ जाती थी जिससे उन्हें पता लग जाता था कि उन्हें खाने से कष्ट हो सकता है। हाथियों को इस बात का डर रहता कि उनकी सूंड में घुसकर ये चींटियां उन्हें काट सकती हैं। पूर्वी अफ्रीका में तेजी से पेड़ों की संख्या में कमी आ रही है। दूसरी तरफ वहां हाथियों की संख्या बढ़ रही है। हाथी अपने खाने के लिए पेड़ों को नुकसान पहुंचाते हैं।

ऐसा नहीं हो सकता

हर बार की तरह आज फिर लड़के वालों ने कोकिल को रिजेक्ट कर दिया था। यह कहकर कि लड़की काली है।लड़के वालों के जाते ही पिता चिल्लाए मैं तो परेशान हो गया हूं इस लड़की से, थक गया हूं इसके लिए वर खोजते-खोजते। पता नहीं इसकी किस्मत में फेरे लिखे हैं कि नहीं।

कैसी औलाद पैदा की है इस मनहूस मां ने। होते से मर जाती तो अच्छा होता। समाज, रिश्तेदारों के सामने नीचा तो न देखना पड़ता। दादी माँ ने आग में घी डालने की कोशिश की।

कोकिल का दिल टूटकर छलनी हो गया था घरवालों की बातों से। अपने कमरे में जाकर वह फूट-फूटकर रोने लगी।

माँ ने सांत्वना दी बेटे दुःखी मत हो, ईश्वर ने सबकी जोड़ी बनाकर भेजी है। समय आने पर सब कुछ अपने आप हो जाएगा। मां ने दिलासा देने की कोशिश की।

मां, इसकी चिंता नहीं है मुझे कि मेरी शादी नहीं हो रही है। पिताजी और दादी की बातें सुनकर मेरा कलेजा छलनी हो जाता है। अगर मैं काली हूं, खूबसूरत नहीं हूं, तो इसमें मेरा क्या कुसूर? पिताजी क्यों नहीं समझते इस बात को... दिन रात मुझे ताने मारते रहते हैं। दम घुटने लगा है मेरा इस घर में।

पिताजी खड़े-खड़े सारी बातें सुन रहे थे। भड़कते हुए बोले दम घुटने लगा है तो भागेगी क्या? वैसे ही हमें तेरे कारण कौन सा कम नीचा देखना पड़ रहा है... फिर अपनी पत्नी सारिका की ओर घूरते हुए बोले कितनी जुबान चलने लगी है इसकी, तुमने ही बिगाड़ा है इसे। इतना बोलेगी तो ससुराल में चार दिन नहीं टिक पाएगी। कौन झेलेगा इसे? अब खड़ी-खड़ी मेरा मुंह क्या देख रही हो, चौके में जाकर कुछ काम-धाम करो और साथ में इसे भी ले जाओ। समझाओ कि कम बोले और ठीक से घर गृहस्थी का काम सीख ले। सौ गुण हों तब कहीं जाकर एक अवगुण दब पाता है।

कुछ बोलने से पहले जरा सोच लिया करो, बेटी के दिल पर क्या गुजर रही है। कभी सोचा है तुमने। कहते हुए सारिका रसोई में चली गई। मां आप कितनी अच्छी हैं, कितना खयाल रखती हैं मेरा। पिताजी को तो बस अपनी इज्जत की चिंता है, मेरी भावनाओं को कभी आज तक समझने की कोशिश नहीं की उन्होंने। चपातियां सेंकते हुए कोकिल बोली।

अब पिताजी का रुख कुछ बदलने लगा था। कोकिल खुश थी और आश्चर्यचकित भी।

एक दिन उन्होंने कोकिल को बुलाकर कहा देखो बेटा हम तुम्हारा बुरा नहीं चाहते। आखिर बेटी हो हमारी। अनजाने में हमसे जो कुछ हुआ इसके लिए हमें खेद है।

पिताजी आप ऐसी बातों क्यों कर रहे हैं, मुझे कोई शिकायत नहीं है बल्कि मेरे कारण आपको कितना परेशान होना पड़ रहा है।

अब इन बातों को छोड़ो जो हुआ सो हुआ। फिर कोई देखने वाले आ रहे हैं क्या? कोकिल ने पूछा।

हां, शायद तुम्हें कोई पसंद न आए। चाहे जो भी हो पर तुम्हें कुछ नहीं कहना है...।

क्या मतलब? मैं कुछ समझी नहीं। पिछली बार तुम्हारे न कहने से ही बात बिगड़ी थी।

मेरी जिंदगी का सवाल है। हर किसी से तो शादी नहीं कर सकती न।

माना कि वह लड़का अच्छा नहीं था पर कल जो लड़का तुम्हें देखने आ रहा है वह खानदानी है। गांव में नाम चलता है उसका एवं उसके परिवार का।

कहां से आ रहे हैं लड़के वाले? सारिका ने रसोई से आते हुए पल्लू पोंछते हुए कहा।

आहूजा परिवार का इकलौता चिराग है वह, कौन नहीं जानता उसे। पिता गर्व से बोले।

अच्छा तो उस जीत की बात कर रहे हैं आप?

हां-हां वही, तुम जानती हो उसे?

उसे कौन नहीं जानता। एक नम्बर का बदमाश है वह। कोकिल से रहा न गया मैं तो अच्छे से जानती हूं उसे।

तुमने कुछ गलत करते अपनी आँखों से देखा है क्या? लोगों ने जो कुछ कहा तुमने उस पर विश्वास कर लिया। लोगों का क्या है कुछ भी कहते रहते हैं। अच्छों को बुरा साबित करना तो लोगों की आदत होती है। हमें किसी की बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिए।

नहीं जी, ऐसा नहीं है। वह लड़का वाकई अच्छा नहीं है। कल ही बाजू वाली सुमन ताई उसके बारे में कितना कुछ बता रही थी। हम आँखों देखे मक्खी नहीं निगल सकते। सारिका ने समझाने की कोशिश की। तुम लोगों की बात पर ध्यान मत दो। शादी के पहले तो सब लड़के ऐसे ही होते हैं। शादी के बाद सब सुधर जाते हैं।

आप कुछ भी कहें मेरी आत्मा नहीं कह रही ऐसे घर में लड़की देने के लिए।

मुसीबत की असली जड़ तुम ही हो। तुम्हारी वजह से इस लड़की के हाथ पीले नहीं हो पा रहे हैं। जैसा खुद बोलती हो वैसा ही इसको भी बोलना सिखा दिया। बहुत हो गई तुम्हारी ये बकवास। अब इस घर में वही होगा जो मैं चाहूंगा। कहते हुए पिताजी ने मां को जोरदार थप्पड़ मारा।

आप जहां चाहे मेरा रिश्ता कर दीजिए पर मां से कुछ मत कहिए।

सुन ले तेरी वजह से मेरा बना बनाया खेल बिगड़ गया तो बात अच्छी नही होगी। बात तय हो चुकी है। वह लोग बस औपचारिकता मात्र के लिए देखने आ रहे हैं। पिताजी आदेशात्मक स्वर में बोले।

आप पिता और पति के नाम पर कलंक हैं। धिक्कार है आपको... चाहे जो भी हो अपनी बेटी की जिंदगी बर्बाद नहीं होने दूंगी... सरिता चीखते हुए बोली।

कोकिल के पिता समझ गए थे अब पत्नी के आगे उनकी दाल गलने वाली नहीं है। वह पछता रहे थे कभी अपने तो कभी अपनी पत्नी के फैसले पर।

– प्रमिला शर्मा

पड़ोसी और संबंधी

संबंधी जन्म से बनते हैं जैसे भी, जो भी
कुछ हम भी बनाते हैं विवाह संबंधों से,
पर उसमें भी भगवान की मर्जी रहती है
कहते भी हैं जोड़ियां ऊपर वाला बनाता है
किन्तु अच्छे पड़ोसी किस्मत से मिलते हैं!
पड़ोसी को पंजाबी में हमसाया कहते हैं
अच्छे पड़ोसी हों तो जीना आसान हो जाता है।
बुरा पड़ोसी जीना दुश्वार कर देता है
रातदिन किलकिल किलकिल मानसिक तनाव
देश विभाजन की त्रसदी ने हमारे लिए ऐसी ही
स्थिति निर्मित कर डाली है।
ऐसा पड़ोसी जो न जीता है, न जीने देता है
जिसका जन्म ही भारत दुश्मनी पर आधारित है
जो पहले अल्लाह, आर्मी, अमरीका पर निर्भर था
अब चीन, आर्मी चीफ और कश्मीर पर निर्भर है
अन्य देश अपने अपने उत्पाद निर्यात करते हैं
वह केवल आतंकवादी बनाता प्रशिक्षित करता है
और एकमात्र आतंकवाद विश्वभर में निर्यात
करता है।

– ओमप्रकाश बजाज

आज दीपोत्सव

गतांक से आगे
धनकुल झूला राग सजाएं

एक से बढ़कर एक राजर्षि.
त्याग तपस्वी और महर्षि।
सूत्र दिया है भाग्य बदलना,
धरती से अंतरिक्ष देवर्षि।।
वीर-भोग्या के साथ है धरती, मां-वसुधा का छिंछन छाएं
वीर-पुत्र स्वाधीन भारत में, धनकुल झूला राग सजाएं।।

+++

पी. मोहन राव

पी.मोहन राव नाम का व्यक्ति,
कलकत्ता का लघु कामगार।
पत्नी दो पुत्रों को लेकर,
जगदलपुर में रह गया जमकर।।
कई-कई कामों से जुड़कर, कहता निज को भाग्य धराएं।
वीर-पुत्र स्वाधीन भारत में, धनकुल झूला राग सजाएं।

+++

सोलह घंटे काम वह करता,
उपहार में तीन घर है पाता।
बच्चों को प्रायवेट अधिकारी,
सपने को कुछ पल दे जाता।।
संजय मार्केट में है ठेला, उसके ज्ञान को मान बनाएँ।
वीर-पुत्र स्वाधीन भारत में, धनकुल झूला राग सजाएँ।।

+++

मेहनतकश मोहन अब
शासन और प्रशासन का है चहेता।
अपने सरिखे औरों को वह,
परिवर्तित तकदीर बताता।।
नई-नई योजनाओं मंत्र से, नव बिहान का शोर मचाएं।
वीर पुत्र स्वाधीन भारत में,धनकुल झूला राग सजाएं।।

+++

राजू-घड़वा

राजू घ़ड़वा बीस साल का,
जब सुंदर युवक को देखा।
संजय बजार में सब्जी बेचकर,
बदल रहा जीवन की रेखा।।
बाल विहार से प्लस टू पास हो,उसके हंसी से हंसमुख भाएं
वीर पुत्र स्वाधीन भारत में, धनकुल झूला राग सजाएँ।।

+++

बैला-बजार इस नगर का राजू,
आरक्षण से धीरज खोकर।
बहन की शादी भाई का पढ़ाई,
उसके लिए है हंसी-ठिठौली।।
घर के बोझ का एक अकेला, मालिक राजू वाह, कमाएं।
वीर पुत्र स्वाधीन भारत में, धनकुल झूला राग सजाएँ।

क्रमशः

–जोगेन्द्र महापात्र जोगी
जगदलपुर

किनकी कैसी दिवाली?

व्यंग्य

माफ कीजिएगा, न तो मैं लक्ष्मीजी हूं, न ही उनका वाहन उल्लू। उल्लू काफी चतुर और चालाक प्राणी है। उसके आगे भला हमारी क्या औकात? फिर भी मैं दीपावली की रात लक्ष्मीजी की तरह बिना वाहन के शहर भ्रमण को निकल पड़ा। मुझे इस रहस्य से पर्दा उठाना था कि दीपावली के दिन किनकी कैसी दीवाली होती है।

काफी देर इधर-उधर घूम-फिरकर दीपों और दिलों को जलते देखने के बाद सबसे पहले मैं एक अधिकारी के पास जा पहुंचा और उनसे पूछा - महोदय, कृपया आप बताने का कष्ट करेंगे कि आपकी दिवाली कैसी होती है?

अधिकारी फौरन बोल पड़ा, (मानो वह इस सवाल का बेसब्री से प्रतीक्षा कर रहा हो) भई! हमारी दिवाली की जगमगाहट तो इतनी अधिक होती है कि हम पर कुदृष्टि डालने वालों की आंखें चौंधिया कर खराब हो जाएं। हमारे लिए तो हर दिन दिवाली है। अकाल-सूखा पड़ा तो दिवाली, बाढ़ आयी तो दिवाली, राहत कार्य की घोषणा होते ही दिवाली या कोई भी नयी सरकारी योजना का प्रारंभ हुआ तो दिवाली। उजाले में दिवाली और अंधेरे में भी दिवाली। हमारी किस्मत में दिवाली के अलावा कुछ है ही नहीं।'

अधिकारी की बातें सुनकर मेरे हृदय में जल रही दीप की लौ कांप गयी। मैं तुरंत वहां से खिसककर एक व्यापारी के पास जा पहुंचा और उससे भी पूछने लगा- 'सेठ जी, आप दिवाली किस ढंग से मनाते हैं, कृपया बताएंगे?

सेठजी कुटिल मुस्कान बिखेरते हुए कहने लगे- 'आखिर हम ठहरे देवी लक्ष्मी के राजकुमार। हमारे लिए तो बारहों महीने दिवाली है। किसान की फसल अच्छी हुई तो कीमत गिराकर दीवाली। अगर फसल नहीं भी हुई तो कोई डर नहीं। खाने के लाले पड़ते ही ये भोले-भाले चले आते हैं अपनी जमीन-जायदाद, गहने-बर्तन गिरवी रखने। फिर तो उनके ब्याज पर ही हमारी हर दिन दिवाली। सारी दुनिया जानती है कि भारत एक कृषि प्रधान देश है। यदि हम व्यापारी ही न रहे तो किसान भी नहीं रहेंगे। फिर क्या भारत कृषि प्रधान देश रह पाएगा? ऐसे में दुनिया के सामने हमारी नाक नहीं कट जाएगी।

व्यापारी की बातें सुनकर मेरी आंखों के आंसुओं ने हृदय में जल रहे व्यथा को बुझाने की अथक प्रयास किया पर मैंने खुद को सम्भाला और वहां से भागकर एक नेताजी के पहुंचा। नेताजी से भी उनकी दिवाली के रूप-स्वरूप को स्पष्ट करने का आग्रह कर बैठा।

नेताजी ने प्यार भरी दृष्टि मुझ पर फेरी और मिठास भरी वाणी में कहने लगे -'बंधुवर! हमारी तो दसों दिशाओं में दिवाली है। अधिकारी, व्यापारी, ठेकेदार आदि की दिवाली तो हमारी दिवाली के आगे सूरज को दीप दिखाने के समान हैं। यहां मैं अपना एक राज आपको बताना चाहूंगा कि इन्हीं के द्वारा दिए जाने वाले नजरानों, भेंट, उपहारों से ही हमारी दिवाली इनसे ही कहीं अधिक श्रेष्ठ है। है न आश्चर्य की बात और फिर जनता-जनार्दन के वोटों से भी हमारी दिवाली बड़ी निराली है। हमारे लिए तो जिधर नजरें घुमाओ, उधर दिवाली। हमारी इतनी निराली दिवाली का एक रहस्य और भी है। हम चोर से कहते हैं कि चोरी कर और लोगों से कहते हैं कि जागते रहो।'

मेरे हृदय में प्रज्ज्वलित दीप भभक उठा। शायद इन लोगों की बातें सुनकर वह बुझने के कगार पर खड़ा अपनी अंतिम विदाई का संकेत दे रहा था। मैं इन लोगों की दिवाली की जगमगाहट, छटपटाहट से खुद को बचाते हुए शहर के आखिरी छोर पर बसी किसानों की बस्ती की ओर चल पड़ा-क्या बात है भाई! तुम्हारी बस्ती में दिवाली की कोई चमक-दमक नहीं? क्या तुम्हें पता नहीं आज दिवाली है? और तुम इस तरह मुंह लटकाये क्यों बैठे हो?

यह सुनते ही किसान का कलेजा मुंह को आ गया। वह रूआंसी सूरत बनाकर मंद स्वर में कहने लगा-'अब का बताव साहब, हमार चारों ओर तो अंधियार ही अंधियार है। ऐ बरस तो भगवान भी नाराज होंगे। पानी के एक बूंद तक न भेजिस। सरकारी बाबू मन के दउरा कई बेर चलिस, नेता आ आ के राहत की घोषणा ऊपर घोषणा करिस। फेर कहां राहत अऊ कइसने राहत, इहां तो सब आहत ही आहत। चारों तरफ सूक्खा ही सूक्खा, किसान होके भी हम भूक्खा। 'फसल के बिना सब धंधा-मजूरी बंद परे हैं, ऊपर ले बैपारी मन बियाज बर गला ला धरे है। हम किसान करत तो का करत, सिरिफ पेट के खातिर जीयन ते मरन? अब आप ही बताइये साहब! अइसन भूख अऊ पयास में देवारी कइसे मनावन, घर में खाय बर तेल नइ है, फेर दीया कइसे जलावन।'

किसान की यह दर्दनाक व्यथा सुनकर मेरी आंखों से आंसुओं की धार फूट पड़ी। इस बार मैं अपने हृदय में जल रही दीप की क्षीणकाय हो चुकी लौ को बचा नहीं सका। वह आंसुओं की बाढ़ में अस्तित्वहीन हो गई। मेरे मन व आत्मा में इस बात को लेकर भीषण अंतर्द्वन्द्व चलने लगा कि मैं दिवाली मनाऊं या न मनाऊं? क्योंकि न तो मैं अधिकारी हूं, न व्यापारी, न नेता हूं, न ही किसान बल्कि मैं तो किसी व्यथा से अपने दिल की दुनिया को अंधकारमय कर चुका एक लेखक हूं और हर पल इस विकट उलझन को सुलझाने में लगा हुआ हूं। अगर आपके पास मेरी इस उलझन का समाधान हो तो दिवाली की रात मुझसे आकर अवश्य मिलें।

– उमेश कुमार साहू

तमसो मां ज्योतिर्गमय

दीपावली दीपों का त्योहार है। दीपों के इस त्योहार में दीपों का विशेष महत्त्व होता है। प्रत्येक घर की दहलीज पर दीपक जलाये जाते हैं। कुटिया, मकान या भवन, सब इस दिन दीपकों की रोशनी से रोशन होते हैं। कई ऊंची-ऊची इमारतों पर छोटी-छोटी लाइटों की लड़ियों द्वारा लुभावनी आकर्षक साज सज्जा की जाती है जिसमें कई प्रतिष्ठानों का अनुपम अद्भुत सौंदर्य देखते ही बनता है। अमीरी गरीबी से परे इस दिन सब के घर-आंगन दीपकों की रोशनी से वातावरण को जगमगा देते हैं। दीपावली की शुभ वेला पर शुद्धता एवं पवित्रता की प्रभा अपना उत्साह बिखरेती प्रतीत होती है। ऐसा लगता है कि मानो इस अवनी पर गगनमंडल में चंद्रमा के साथ तारामंडल का परिवार एक साथ विराज चुका है और इस कारण इस दिन प्रत्येक के अंतरमन उत्साह एवं उमंग से भरे पड़े हैं। सुना जाता है कि अज्ञान पर ज्ञान, गंध पर सुगंध और अंधकार पर प्रकाश की विजय इसी दिन हुई थी जिस कारण दीपावली बड़ी खूबसूरत और मनभावन प्रतीत होती है।

दीपावली पर दिये जलाने का पर्याय मात्र त्यौहार मनाने से नहीं किंतु संपूर्ण वातावरण को शुद्ध एवं पवित्र बनाने से है। दीपावली के दिये हमें 'तमसो मां ज्योतिर्गमय' का शुभ संदेश देते हुये अंधकार से प्रकाश की ओर जाने की नवप्रेरणा देते हैं।

हमारी संस्कृति की अमिट छाप दीपावली में मिलती है। पहले दिये हाथ से बनाये जाते थे। जैसे समय में बदलाव आया, तब कुम्हारों के द्वारा मिट्टी के दिये बनाने और जलने लगे हैं। समय के साथ दिये का स्वरूप परिवर्तन होता गया है। अब मिट्टी के साथ धातुओं के दिये भी बाजार में मिलने लगे हैं जैसे तांबा, पीतल, कांसा चांदी, अल्युमीनियम आदि। यह भी ध्यान रखें कि थोड़ी सी असावधानी बरती तो काफी बड़ा नुकसान हो सकता है, इसलिए इस त्यौहार में सावधानी नितांत आवश्यक हो जाती है। तभी हमारी दीपावली जगमग दियों के साथ उमंग और उत्साह बिखेरेगी। दीपावली पर्व तभी सार्थक होगा जब हमारा मन पवित्र आचरण करे।

– दिलीप पराडकर